

sumário

| | |
|-------------------------------|-----|
| <i>INTRODUÇÃO</i> | 7 |
| <i>SUA RAZÃO DE SER</i> | 15 |
| <i>1. O CONCEITO</i> | 17 |
| cânones..... | 20 |
| leis..... | 41 |
| <i>2. O USO</i> | 59 |
| liturgia | 61 |
| mercancia..... | 82 |
| <i>SUA FORMA DE SER</i> | 105 |
| <i>3. O ÂMBITO</i> | 107 |
| locais pios | 110 |
| logradouros públicos | 132 |
| <i>4. O TRATO</i> | 155 |
| imaginária | 158 |
| alegoria | 177 |
| <i>CONCLUSÃO</i> | 199 |
| <i>Apêndice 1</i> | 202 |
| <i>Apêndice 2</i> | 204 |
| <i>Fontes citadas</i> | 207 |
| <i>Sobre o Autor</i> | 219 |